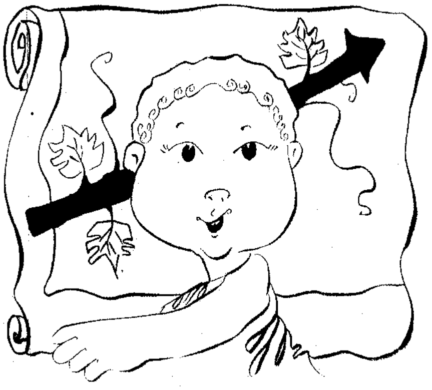

2

जनसंख्या : समृद्धि का एक कारण

जब ऐसा कहा गया है कि मानव (Homo Economicus) धन पैदा करने के लिए तैयार किया गया एक यंत्र है, तो, भारतीय अर्थ ाास्त्र में बताए जा रहे उस तर्क की जाँच करना अत्यन्त आव यक हो जाता है, जिसके अनुसार भारत की वि ााल जनसंख्या गरीबी का एक कारण है। यदि मनुश्य एक मात्र ऐसी प्रजाति है जो धन पैदा कर सकती है, तो, इसकी अधिक संख्या गरीबी का कारण कैसे हो सकती है? सच क्या है?

सच यह है कि नक ो पर अंकित प्रत्येक बिन्दु, जो किसी भाहर या कस्बे को प्रदि ति करता है और घनी आबादी वाला है, अन्य स्थानों (यथा गाँव आदि जो नक ो पर नहीं दिखते) की अपेक्षा समृद्ध है। भीड़ भरी दिल्ली में खाली पड़े झुमरी तलैया के मुकाबले कहीं ज्यादा लखपति व करोड़पति, ज्यादा मोबाइल फोन या बड़ी कारें और तरण ताल हैं। स्वाभाविक रूप से प्र न उठता है – ऐसा क्यों? उत्तर के लिए हमें देखना होगा – अर्थ ाास्त्र की ओर। अर्थ ाास्त्र यानि *धन पैदा करने का अध्ययन* ।

चूँकि हम व्यापार कर सकते हैं, अतः अपने उन कार्यों में हम विशे ाज्ञता अर्जित करते हैं, जिन्हें हम ही सबसे अच्छे तरीके से कर सकते हैं और इन्हें दूसरों की उन वस्तुओं या कार्यों से बदल लेते हैं, जिन्हें वे सबसे अच्छी

तरह से कर सकते हैं। जानवरों की तरह, मनुश्य स्व–पर्याप्ती (self–sufficient)[1] होने की कोभिाभा नहीं करते हैं वरन् वे अपने लिए एक विभोश कार्यक्षेत्र चुनते हैं। इन विभिाश्ट कार्यक्षेत्रों में वे उन वस्तुओं या सेवाओं का उत्पादन करते हैं, जिनका बाज़ार अर्थव्यवस्था में विनिमय किया जा सके। किसान, मछुआरे गड़रिये, पत्रकार, दंत चिकित्सक, धोबी इत्यादि सभी इसी व्यवस्था के उदाहरण हैं। मनुश्यों के अतिरिक्त कोई भी अन्य प्रजाति इस ढंग से वि ोशीकृत नहीं होती है क्योंकि उनके पास बाज़ार अर्थव्यवस्था नहीं होती है। यह बाज़ार अर्थव्यवस्था सिर्फ हम मनुश्यों की व्यापार करने की वि ोश योग्यता का ही परिणाम है। इसी प्रकार धन पैदा किया जाता है।

अतः आर्थिक रूप से मनुश्यों को कभी भी स्व–पर्याप्ती (self–sufficient) होने की सलाह नहीं दी जानी चाहिए। ज़रा सोचिए कि यदि आपने नि चय किया कि आप सभी कार्य अपने आप करेंगे तथा सेवाओं व वस्तुओं का आदान–प्रदान नहीं करेंगे, तो क्या होगा? सोचिए! यदि आपका परिवार, फिर आपका गाँव या भाहर सभी स्व–पर्याप्ती हो जायें? इसका अर्थ यह होगा कि आपको न केवल अपना भोजन पैदा करने एवं कपड़े धोने के लिए बाध्य होना पड़ेगा वरन् आपको अपना मकान बनाना, सर्जरी या ऑपरे ान करना आदि भी सीखना पड़ेगा। इस प्रकार स्व–पर्याप्तता (self-sufficiency) कभी भी जीवन स्तर को ऊपर नहीं उठाती। इसका कुल परिणाम यही होता है कि आपकी उत्पादन ऊर्जा आपके वि ोश योग्यता वाले क्षेत्रों से हटकर ऐसी जगहों व कार्यों पर बर्बाद होना भाुरू होती है जिनमें आपको महारत नहीं होती।

यदि इस प्रकार की स्व–पर्याप्तता एक व्यक्ति, परिवार, एक गाँव, एक कस्बे के लिए नुकसानदेह है, तो नि चत ही भारत जैसा एक महान दे ा भी इस रास्ते को अपनाकर फायदे में नहीं रह सकता।

स्व–पर्याप्तता एक प्रकार की आर्थिक आत्महत्या (economic suicide) है।

स्व–पर्याप्तता को समझने के लिए एक छोटा–सा प्रयोग करें – बच्चों की एक कक्षा में जाइये और उनसे पूछिए कि वे बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं? वे जवाब देंगे – एक्टर, डान्सर, सिपाही, डॉक्टर आदि। मैं भार्त लगा सकता हूँ कि उनमें से कोई भी यह नहीं कहेगा कि मैं बड़ा होकर स्व–पर्याप्ती बनूँगा

---

[1] स्वयं में ही पूर्ण होना अर्थात् अपने सभी कार्य जैसे – अपना भोजन पकाना, मकान बनाना, बाल बनाना, अपना ऑपरे ान करना, यानि, सब कुछ स्वयं ही करना। अपने किसी भी कार्य के लिए किसी अन्य पर निर्भर न होना।

(अर्थात् स्वयं को इस रूप में विकसित करूँगा कि सारे कार्य स्वयं कर सकूँ, किसी पर निर्भर न रहना पड़े)। यदि स्व–पर्याप्तता छोटे बच्चों के तर्कों से विरोधी है तो यह पूरे दे ा के लिए कैसे तार्किक हो सकती है?

जब हम बाज़ार–अर्थव्यवस्था को वि ोशीकृत करते हैं तो एक प्रक्रिया भाुरू होती है, जिसे अर्थ ाास्त्री ''श्रम विभाजन'' (division of labour) कहते हैं।

अर्थशास्त्र श्रम विभाजन द्वारा धन की उत्पत्ति का अध्ययन है।[2]

अनेक वि ोश योग्यताओं वाली भूमिकाओं के बीच श्रम विभाजन भाहरी क्षेत्रों में ही सर्वाधिक उपयुक्त रूप से संभव है। एक गाँव में जहाँ बहुत कम लोग होते हैं, वहाँ श्रम विभाजन अत्यन्त दुश्कर कार्य है। यही वजह है कि गाँव में सफल सर्जन, यहाँ तक कि सफल धोबी[3] होने की गुजांइ ा भी कम ही होती है।

इसीलिए नक ो पर दिखने वाला प्रत्येक बिन्दु (कोई भाहर या कस्बा) घनी आबादी वाला होता है और समृद्ध होता है। किसी भी भाहर या कस्बे (जहाँ अपेक्षाकृत जनसंख्या ज्यादा होती है) में कम जनसंख्या वाले गाँव के मुकाबले अधिक सम्पन्नता होती है क्योंकि वहाँ श्रम विभाजन अधिक होता है। श्रम विभाजन की सीमा व मात्रा बाज़ार के आकार पर निर्भर करती है। बाज़ार जितना व्यापक होता है, श्रम विभाजन उतना ही ज्यादा होता है। उदाहरण के लिए – यदि आप एक चाइनीज भोजनालय खोलना चाहते हैं और चाहते हैं कि प्रतिदिन कम से कम 100 ग्राहक आएं, और यदि 100 में एक व्यक्ति किसी दिन चाइनीज भोजन करना चाहता है तो अपने 100 ग्राहक प्रतिदिन की आव यकता पूर्ति के लिए आपको ऐसे कस्बे या ाहर की आव यकता होगी जहाँ कम से कम दस हजार संभावित ग्राहक हों। यही कारण है कि भीड़ भरे, ज्यादा जनसंख्या वाले भाहर समृद्ध हैं – क्योंकि वहाँ श्रम का विभाजन ज्यादा होता है। यह एक भााभवत प्रक्रिया है – केवल दिल्ली या मुम्बई ही नहीं, वरन् लंदन, टोकियो, न्यूयार्क एवं पेरिस आदि सभी घनी जनसंख्या युक्त है एवं समृद्ध हैं।

संसार का लगभग 50 प्रति ात भाहरीकरण हो चुका है – अर्थात् वि व की 50 प्रति ात जनसंख्या भाहरों एवं कस्बों में निवास करती है। भारत वि व के इस औसत प्रति ात से काफी नीचे, मात्र 30 प्रति ात पर है। परन्तु भारत के

---

[2] यह बाद में स्पष्ट किया जाएगा कि श्रम विभाजन के परिणामस्वरूप ज्ञान का विभाजन भी हो जाता है।

[3] भारत में मौजूद विभिन्न जाति इसी बात को प्रमाणित करती है कि भारत एक नागरिक (ाहरी) सभ्यता है, और थी। स्व–पर्याप्त गाँवों वाला ग्रामीण संसार श्रम विभाजन और कार्य वि ोशज्ञता पर आधारित ऐसी जाति व्यवस्था को पैदा नहीं कर सकता था।

समृद्धतम राज्य, गुजरात एवं महाराश्ट्र में भाहरीकरण का औसत वि व के औसत 50 प्रति ात के आस–पास है जबकि भारत के सबसे गरीब राज्य जैसे– असम एवं बिहार में भाहरीकरण का औसत 10 प्रति ात से भी कम है।

यहाँ यह जानना महत्त्वपूर्ण है कि *सभ्यता* (civilization) भाब्द लैटिन भाशा के भाब्द सिविटास (civitas) से लिया गया है, जिसका अर्थ ' ाहर' (city) होता है। सभ्यता की कहानी, मध्य सागर के चारों ओर बसे हुए तथा एक दूसरे के साथ वस्तुओं और सेवाओं के आदान–प्रदान अर्थात् व्यापार करने वाले बड़े भाहरों के निर्माण की ही कहानी है। मोहन–ज़ो–दाड़ो एवं हड़प्पा भी, लोथल बन्दरगाह द्वारा, मध्य सागर से जुड़े हुए महान भाहर थे। इस छोटे और सुरक्षित सागर ने परिवहन की सुविधा दी, जिससे व्यापार को बढ़ावा मिला। भाहर एवं कस्बे मानव उपनिवे ाकों की बाँबी हैं। भाहर को बर्बाद कर विकास का कोई भी प्रयास निरर्थक है।

सम्पूर्ण वि व में भाहरीकरण, श्रम विभाजन की सहायता से, समृद्धि बढ़ाता है। इसलिए भारत जैसे दे ाों में भाहरीकरण को सम्पन्नता बढ़ाने के साध ान के रूप में अपनाना , सरकार के पिछले 50 वर्शों के प्रयासों (ग्रामीण विकास के नाम पर निरर्थक धन का व्यय) की अपेक्षा बेहतर विकल्प है। अभी हाल ही के आर्थर एण्डरसन फॉर्चून के वि वव्यापी सर्वे में भारत के भाहरों को सबसे खस्ताहाल स्थिति में पाया गया। नि चत ही सम्पन्न दे ा होने का यह तरीका नहीं है।

ाहरी क्षेत्र संपन्न हैं क्योंकि जनसंख्या सम्पन्नता का कारण है।

सामान्य कुप्र ाासन के अलावा, सड़कों की बदतर स्थिति भी हमारे नगरीय क्षेत्र की बर्बादी का एक प्रमुख कारण है। इस मुद्दे पर हम बाद के अध्यायों में विस्तार पूर्वक चर्चा करेंगे। अभी के लिए यह समझें कि हमारे यहां की एस.टी.डी. कोड की पुस्तक में 400 से अधिक नाम हैं (अर्थात् इतने सारे भाहर हैं)। परन्तु भाहरी जनसंख्या का अधिकां ा (एक अनुमान के मुताबिक 62.5%) केवल कुछ मुट्ठीभर वि ााल महानगरों में केन्द्रित है, जो कि प्रतिदिन और बढ़ रहा है। भाहरी भूगोल भाास्त्री (जो भाहरों एवं कस्बों के भूगोल का अध्ययन करते हैं), इस प्रक्रिया को आधिपत्य (Primacy) कहते हैं। आधिपत्य तब होता है जब मुख्य भाहर अपने आस–पास के कस्बों से सही प्रकार से जुड़ा नहीं होता तथा स्वयं भरता जाता है। यदि सड़कें अच्छी होती तो उपनगरों (सैटेलाइट कस्बे) का विकास होता और केवल कुछ गिने चुने महानगरों पर पड़ने वाला

अत्यधिक दबाव कम होता और एस.टी.डी. कोड की किताब का प्रत्येक नाम एक छोटा सिंगापुर होता।

अंग्रेजों ने अपने समय में भारत में कई बढ़िया भाहर व असंख्य 'हिल स्टे ान' बनाए। पिछले पचास वर्शों में हमारे सभी भाहरी क्षेत्र बर्बाद हो चुके हैं। ब्रिटि ा कालीन भारत में सभी हिल स्टे ान किसी न किसी महानगर से जुड़े थे। यथा – दार्जिलिंग–ि ालांग का क्षेत्र कोलकाता से, पूना–महाबले वर का क्षेत्र मुम्बई से, ऊटी–कुनूर का क्षेत्र चेन्नई से तथा ि ामला–मसूरी का क्षेत्र दिल्ली से जुड़ा है। इसी तरह से यदि हमारे भाहरी क्षेत्र महानगरों से जुड़ जायें तो वे सभी सिंगापुर की तरह हो सकते हैं। ध्यान रहे, सिंगापुर 1965 में ही आजाद हुआ और कुलियों तथा फेरी वालों की भीड़ से भरे छोटे से गन्दे भाहर से आज उभरता हुआ विकसित भाहर बन गया है।

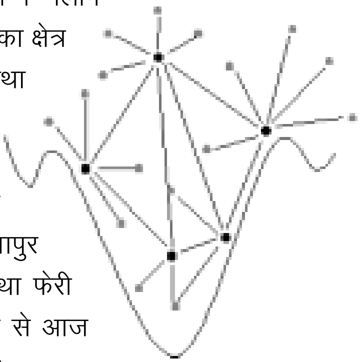

सड़कों की बदतर स्थिति के कारण भारत के भाहरों में ज़रूरत से ज्यादा भीड़ है, लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि दे ा में आव यकता से अधिक जनसंख्या है। कभी ट्रेन या हवाई जहाज से यात्रा करें तो आप पायेंगे कि भारत में वि ाल खुले मैदान हैं। जापान, जर्मनी, हालैण्ड एवं बेल्जियम का जनसंख्या घनत्त्व (प्रति वर्ग किलोमीटर में व्यक्तियों की संख्या) भारत के जनसंख्या घनत्त्व से अधिक है फिर भी इन दे ाों के भाहरों में अत्यधिक भीड़ की समस्या नहीं है। भाहरों में बढ़ती अत्यधिक भीड़ को रोकने का उपाय परिवार नियंत्रण नहीं है, वरन् वे सड़कें हैं जो बहुत सारे कस्बों को मुख्य भाहर से जोड़ेंगीं। बहुत सारे भाहरी क्षेत्र अर्थात् 400 सिंगापुर होने से भारतीयों के पास आव यकतानुरूप रहने के लिए स्थान होगा तथा अत्यधिक भीड़ की समस्या समाप्त होगी।

इसलिए यह तर्क दृश्टिकोणों में द्वन्द (मतभेद) पैदा करता है। हजारों *स्व ाासित* व *स्व–पर्याप्त* ग्रामीण संघों (गाँधी व नेहरू का दृश्टिकोण) के रूप में भारत का भविश्य देखने की अपेक्षा हम भारत को एक भाहरी सभ्यता के रूप में देख सकते हैं। ऐसे 400 बढ़िया भाहरों के मध्य, जो कि सड़क, रेल या वायुमार्ग द्वारा भली प्रकार जुड़े हों, सर्वाधिक व्यापार सबसे कम कीमत पर सम्पन्न हो सकता है। घटिया परिवहन व्यवस्था व्यापार को मँहगा व धीमा बनाती है। एक

ट्रक एक दिन में भारतीय राजमार्गों पर लगभग 250 किमी चलता है जबकि भोश संसार में 600 किमी. से अधिक चलता है।

ऐसा कहा जाता है कि ''प्रत्येक बड़ा ाहर अपने परिवहन तंत्र पर विशाल मकड़ी की तरह बैठा होता है।'' भारत को भी ऐसे भाहरों एवं कस्बों की आव यकता है।

चूँकि मानव मात्र ही आर्थिक गतिविधियाँ सम्पन्न कर सकते हैं और चूँकि ाहर समृद्ध होते हैं अतः ऐसा कहा जाना चाहिए कि ''जनसंख्या को गरीबी का कारण बताने वाला सिद्धान्त'' ैतान का दर्शन है।

यह द ानि माता–पिता को बच्चे पैदा करने के कारण भार्मिन्दा करता है। यह द ानि बच्चों में यह भावना पैदा करता है कि वे संसाधन नहीं हैं वरन् समस्या हैं। यह द ानि मार्ग–दुर्घटनाओं के आँकड़ों पर मानवद्वेशी नजर रखता है और कहता है कि हमारी असुरक्षित सड़कें बढ़ती जनसंख्या की समस्या का एक समाधान हैं।

मानव दुनिया के सर्वोत्तम संसाधन हैं क्योंकि उनके पास सोचने के लिए मानव मस्तिश्क है। आप उसी मस्तिश्क में ज्ञान उड़ेलने का अर्थात् खुराक देने का प्रयास कर रहे हैं। अतः कृपया यह निि चत कर लें कि जो भी खुराक आप मस्तिश्क को दें वह सत्य पर आधारित हो। असत्य द ानि आपके मस्तिश्क को मृत कर देगा तथा फिर आपको यह नहीं सोचने देगा कि आप अपने दिमाग के प्रयोग व व्यापार करने की योग्यता से, मुक्त बाज़ार अर्थव्यवस्था में अपना सर्वोत्तम कार्य करते हुए धन पैदा कर सकते हैं, बल्कि यह आपको इस प्रकार सोचने के लिए प्रि ाक्षित करेगा कि आप एवं आपके भाई–बन्धु ही विकराल समस्या हैं, जिनके समाधान के लिए आपको राजनीतिक कार्यवाही की आव यकता है।

''क्यों बाज़ार की अर्थव्यवस्था में राजनैतिक हस्तक्षेप हमारे लिए और हमारे दे ा के लिए अत्यन्त नुकसानदेह है?'' यह जानने के लिए आइये अगले अध्याय ''राजनैतिक बाज़ार'' की ओर चलें।

ज़रा सोचिये

- अपने भाहर की गतिविधियों पर दृश्टि डालें व श्रम विभाजन का कोई कृत्य तला ों। सोचें कि क्या वह कार्य एक विरल आबादी वाले गाँव में लाभदायक ढंग से किया जा सकता है? (उदाहरण के लिए कान की बीमारियों के लिए एक संस्थान)
- अपने आस–पास कुछ ऐसे गरीब लोग तला ों जो भाहर में श्रम–विभाजन की प्रक्रिया में भाग लेकर अपनी जीविका चलाते हों (जैसे – धोबी)। सोचें! क्या यह व्यक्ति गाँव में बेहतर तरीके से रह पाता? उससे भी पूछें।